B.A. Part I

(भारतीय अर्थव्यवस्था)

Economy of India

PAPER-II

निम्न प्रश्नों का उत्तर 20 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न– प्राकृतिक संसाधनों का भारत के विकास के सन्दर्भ में महत्व बताइये?

उत्तर– भारत में खनिज आधारित उद्योग के विकास, परम्परागत एवं गैर–परम्परागत ऊर्जा संसाधनों के विकास की व्यापक सम्भावनाएँ है।

प्रश्न– 12वीं पंच वर्षीय योजना के 2 उद्देश्य लिखिए?

उत्तर– 1. विकास दर का लक्ष्य 8 प्रतिशत
2. सभी गांवो का विद्युतीकरण करना।

प्रश्न– अल्प विकसित अर्थ व्यवस्था की 2 विशेषताएं बताइये।

उत्तर– 1. देश की अधिकतम जनसंख्या का कृषि पर निर्भर होना।
2. देश के जी.डी.पी. में कृषि का योगदान अधिक होना।

प्रश्न– न्यूनतम समर्थन मूल्य क्या है?

उत्तर– सरकार द्वारा घोषित उपज का वह मूल्य, जिसके नीचे बाजार मूल्य चले जाने पर सरकार समर्थन मूल्य पर उपज खरीदने को तैयार रहती है।

प्रश्न– औद्योगिक नीति 1991 की कोई 2 विशेषताएं बताइये।

उत्तर– 1. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (F.D.I) की सीमा में वृद्धि की गई।
2. अधिकांश उद्योगों को लाइसेन्स से मुक्त कर दिया गया।

प्रश्न– IDBI का मुख्य कार्य क्या है?

उत्तर– IDBI का मुख्य कार्य उद्योगों को वित्तिय सहायता प्रदान करना तथा उद्योगों के विकास में लगी संस्थाओं को बढ़ावा देना है।

प्रश्न– मुद्रास्फिति क्या है?

उत्तर– सामान्य कीमत स्तर में लगातार व तीव्र वृद्धि होना मुद्रा स्फिति कहलाता है।

प्रश्न– 'छिपी हुई बेरोजगारी' क्या होती है?

उत्तर– जब किसी उत्पादन के साधन (श्रम) की सीमान्त उत्पत्ति शुन्य या निकट शून्य ($MP_L<0$) हों तो वह छिपी हुई बेरोजगारी होती है।

प्रश्न– कार्यशील जनसंख्या का क्या अभिप्राय है?

उत्तर– कार्यशील जनसंख्या का अभिप्राय सम्पूर्ण जनसंख्या के उस भाग से लगाया जाता है जो आर्थिक कार्यों में संलग्न हो।

प्रश्न– पिछड़े क्षेत्रों के विकास हेतु चलाए जा रहे किन्ही दो विशिष्ट कार्यक्रमों के नाम बताइये?

उत्तर– 1. जनजाति क्षेत्र विकास कार्यक्रम
2. मरू विकास कार्यक्रम

प्रश्न– भारतीय विदेशी व्यापार नीति (2015–20) के मुख्य लक्षण क्या थे?

उत्तर– 1. पिछली विदेशी व्यापार नीति की 6 स्कीमों को मिलाकर एक स्कीम भारत से माल निर्यात स्कीम में बदला गया है। इसमें 110 नयी मदें शामिल की गयी है।
2. पहले की Served from India Scheme (SFIS) के स्थान पर Service Export from India Scheme (SEIS) लायी गयी है। इससे सेवा–प्रदाताओं को लाभ होगा।

[J.D.P.G. COLLEGE]

3. MEIS व SEISदोनो को स्पेशल आर्थिक क्षेत्रों पर भी लागू किया गया।

4. निर्यात के सम्बन्ध में प्रपत्रों को पेश करने की प्रक्रिया को सरल बनाया गया।

प्रश्न– एक अल्पविकसित अर्थव्यवस्था के रूप में भारतीय अर्थव्यवस्था की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रति व्यक्ति आय का स्तर काफी नीचा है, ग्रामीण परिवारों में यह और भी कम है, रोजगार के अवसरों का अभाव है, विनिर्माण क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है, वार्षिक आर्थिक वृद्धि दर सम्भावित वृद्धि दर से नीची है।

प्रश्न– विदेशी प्रत्यक्ष विनियोग की परिभाषित कीजिये।

उत्तर– इसके अन्तर्गत विदेशी पूँजी का इनफ्लो भारत में उपक्रमों में भागीदारी के रूप में होता है, ये लाभ–हानि में हिस्सा लेते है, इनमें इसका सिंगल ब्राण्ड व मल्टी ब्राण्ड में स्वागत किया है, यह विदेशी संस्थागत निवेश (एफ आइ आई) से ज्यादा अच्छा माना जाता है।

प्रश्न– भारत में किस राज्य में महिला – साक्षरता का स्तर 2011 में सबसे नीचा व कितना रहा है?

उत्तर– भारत में महिला साक्षरता का स्तर बिहार में सबसे नीचा 51.5 प्रतिशत रहा, जबकि राजस्थान में 52.1 प्रतिशत रहा (संशोधित आंकडे)

प्रश्न– चकबन्दी का क्या अर्थ है?

उत्तर– जब एक कृषक या कृषकों के कई स्थानों में बिखरे विभिन्न भूखण्ड को एक जगह लाने की प्रक्रिया लागू की जाती है तो उसे जोतो की चकबन्दी कहा जाता है, इसका भूमि सुधारों में बहुत महत्व माना जाता है, क्योंकि इससे भूमि की उत्पादकता बढ़ती है।

प्रश्न– केन्द्रीय सार्वजनिक उपक्रमों में उत्पादन में किनका योगदान सर्वाधिक माना जाता है?

उत्तर– पेट्रोलियम, कोयला, इस्पात, विद्युत, पॉवर–सृजन व सेवाओं के विपणन का योगदान सर्वाधिक माना जाता है।

प्रश्न– भारत में आर्थिक नियोजन में किन चार उद्देश्यों पर सर्वाधिक बल दिया गया है?

उत्तर– विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में आर्थिक वृद्धि दर को बढ़ाने, रोजगार–संवर्धन, निर्धनता–निवारण तथा सामाजिक विकास (शिक्षा, स्वास्थ्य आदि) पर सर्वाधिक बल दिया गया है।

प्रश्न– बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012–2017) में योजना के उद्देश्यों में क्या परिवर्तन किया गया है?

उत्तर– इसमें 'अधिक तेज वृद्धि दर, समावेशी व सुस्थिर विकास' पर बल दिया गया ताकि सालाना वृद्धि दर 8–9 प्रतिशत प्राप्त की जा सके, विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों को प्राप्त हो सके, एवं विकास वर्तमान पीढ़ी व भावी पीढ़ी दोनों के लिए टिकाऊ किस्म का हो सके।

प्रश्न– भारत में जनसंख्या नियंत्रण का सर्वाधिक कारगर उपाय लिखिये।

उत्तर– देश में '2 बच्चों के नॉर्म को लागू करने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चालाया जाना चाहिए, जिसके लिए व्यापक संगठन, जन–प्रेरणा व जनसहयोग की विस्तृत रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए।

100 शब्दों से अधिक उत्तर नही होना चाहिए

प्रश्न– ऊर्जा के परम्परागत एवं गैर–परम्परागत संसाधनों में क्या अन्तर है?

उत्तर– ऊर्जा के परम्परागत या व्यावसायिक संसाधनों में कोयला, तेल, जल–विद्युत (25 मेगावाट से अधिक के सृजन के लिए) तथा परमाणु स्त्रोत शामिल होते है। इनमें मुख्य अन्तर यह होता

J.D.P.G. COLLEGE

है कि परम्परागत साधन समाप्त होने वाले होते है, जबकि गैर परम्परागत साधन सामाप्त नही होते है। विश्व में आजकल गैर–परम्परागत साधनों पर ही अधिक बल दिया जा रहा है, क्योकि इनको साफ ऊर्जा माना जाता है और भावी विकास इनके आधार पर अधिक स्थायी रूप में चलाया जा सकता है। इनमें गोबर गैस, ईधन की लकडी, कृषि व्यर्थ पदार्थ आदि भी शामिल होते है। चूंकि इन्हें पुनः नया किया जा सकता है, इसलिए इनके आधार पर विकास प्रक्रिया निरन्तर जारी रखी जा सकती है।

प्रश्न– भारत में आर्थिक उदारीकरण की नीति को क्यों स्वीकार किया गया है?

उत्तर– भारत में 1991 से आर्थिक सुधारों की नीति को स्वीकार किया गया था, क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था काफी संकट के दौर से गुजर रही थी और सरकार का राजकोषीय घाटा बहुत ऊंचा हो गया था, विदेशी विनिमय कोष बहुत नीचे स्तर पर आ गया था और सरकार के समक्ष वैश्वीकरण के युग में आर्थिक उदारीकरण का मार्ग अपनाने के अलावा कोई विकल्प शेष नही रहा गया था। इसलिए सरकार ने आर्थिक सुधारों का मार्ग अपनाया ताकि विदेशी व्यापार बढाया जा सके, विदेशी पूंजी का इनफ्लोर बढाया जा सके ताकि निवेश बढाकर आर्थिक वृद्धि दर ऊंची की जा सके और विदेशी प्रौद्योगिकी का आयात करके देश की अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण किया जा सके। उदारीकरण की नीति में निजीकरण, बाजारीकरण व लाइसेंस व्यवस्था को समाप्त करने तथा स्वतंत्र अर्थव्यवस्था की ओर जाने पर बल दिया गया है। आगामी वर्षों में इन नीति को व्यापक रूप से जारी रखकर हम अपनी समस्याओं को उचित समाधान निकाल सकेगें। इसके लिए वस्तु व सेवा कर को कार्यान्वित करने, श्रम सुधार, भूमि–सुधार, कर – सुधार आदि करने जरूरी माने गये है।

प्रश्न– भारत में बेरोजगारी और निर्धनता की समस्या के समाधान के लिए संयुक्त कार्यक्रमों की सूची दीजिए।

उत्तर– 1. सर्वप्रथम, इन दोनो समस्याओं के एक साथ समाधान के लिए तीव्र आर्थिक विकास व उचित जनसंख्या नियंत्रण आवश्यक है। इन दोनो मोर्चों पर डटकर काम करना होगा, जैसा कि अभी तक चीन के अनुभवों से पता चल पाया है।

2. ग्रामीण परिवारों की सामाजिक –आर्थिक जाति जनगणना 2011 के परिणामों से ज्ञात हुआ है कि उनकी स्थिति काफी दयनीय है। अधिकांश परिवारों के पास माकन, रोजगार, आमदनी की उचित व्यवस्था नही है। इस समस्या के समाधान के लिए विभिन्न फ्लैगशिप कार्यक्रमों जैसे मनरेगा, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार मिशन, ग्रामीण आवास योजना, पेंशन योजना आदि को अधिक तत्परता से लागू करना होगा।

3. निवेश बढाकर आर्थिक वृद्धि दर ऊंची करनी होगी। इसके लिए स्वदेशी व विदेशी दोनो प्रकार के निवेश में वृद्धि करनी होगी।

प्रश्न– कृषि के लिए संस्थागत साख का वर्तमान ढांचा लिखिए। उसमें किस संस्था का सर्वोपरि स्थान है?

उत्तर– कृषिगत संस्थागत ढांचे की प्रमुख एजेन्सियाँ इस प्रकार है – सहकारी साख समितियां, अनुसूचित व्यापारिक बैंक, इनके तहत कार्यरत प्रादेशिक ग्रामीण बैंक व राज्य सरकारे कृषकों को प्रत्यक्ष कर्ज प्रदान करते है।ये कर्ज अल्पकालीन व दीर्घकालीन दोनों प्रकार के होते है और इनमें प्रथम स्थान सहकारी समितियों का होता है और दूसरा स्थान व्यापारिक बैंकों का होता है। कृषक अप्रत्यक्ष वित्त निम्न संस्थाओं के द्वारा प्रदान किया जाता है– राज्य सहकारी बैंक, केन्द्रीय सहकारी बैंक, अनुसूचित व्यापारिक बैंक, RRBs व ग्रामीण विद्युतीकरण निगम। इसमें

ग्रामीण विद्युतीकरण निगम का योगदान बढा है।

भारत में कृषि के लिए संस्थागत साख के क्षेत्र में कई प्रकार की समस्याएँ सामने आयी है – जैसे ओवरड्यूज की समस्या का पाया जाना, सहकारी साख व सहकारी ब्रिक्री की में आवश्यक तालमेल का अभाव रहना एवं कृषिगत क्षेत्र में निवेश के स्थान पर सब्सिडी का बोलबाला होने से कृषि में प्रगति का मार्ग अवरूद्ध रहा है। अतः कृषिगत साख के सम्पूर्ण ढांचे में सुधार करके इसे उत्पादनोन्मुख बनाया जाना चाहिए।

प्रश्न– भारत में औद्योगिक क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था की पृष्ठभूमि में सावर्जनिक उपक्रमों के योगदान को औद्योगिक नीतियों में सदैव स्वीकारा गया है। इसका कारण प्रारम्भ में तो यह माना गया था कि बेसिक व आधारभूत तथा भारी उद्योगों–जैसे इस्पात, भारी रसायन, उर्वरक आदि के कारखानों के विस्तार के लिए निजी क्षेत्र के पास विशाल मात्रा में पूंजीगत साधनों का अभाव पाया गया था। इसलिए सरकार को इन क्षेत्रों में प्रवेश करना पड़ा है। सार्वजनिक क्षेत्र का विकास रोजगार बढाने, निर्यात–संवर्धन व सहायक उद्योगों के विकास के लिए भी किया गया है। लेकिन कालान्तर में सार्वजनिक उपक्रमों में बढते घाटों, कार्यकुशलता के अभाव व प्रबन्धकों द्वारा निर्णय में विलम्ब तथा नवाचार की कमी, आदि के कारण एवं आर्थिक उदारीकरण के बढते प्रभाव के कारण निजी क्षेत्र को आगे बढने का ज्यादा अवसर मिल गया है, जिससे सार्वजनिक क्षेत्र का बोलबाला घटता गया है, लेकिन इसकी भूमिका अभी भी कायम है और आगे भी कायम रहेगी।

प्रश्न– भारतीय नियोजन की चार विफलताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 1. देश में आज भी आधारभूत ढांचे का पर्याप्त मात्रा में विकास नही हो पाया है। यहां सडको, रेलो, हवाई अड्डो, सिंचाई के साधनों आदि का अभाव बना हुआ है। इससे तीव्र आर्थिक विकास अवरूद्ध हो रहा है। दक्ष श्रमिको के लिए उत्तम वेतन व रोजगार का अभाव पाया जाता है।

2. देश में दक्ष, अर्द्धदक्ष, अदक्ष श्रम को भारी मात्रा में बेरोजगारी का सामना करना पड़ रहा है। श्रम की मांग व श्रम की पूर्ति में भारी बेमेल प्रतीत होता है।

3. ग्रामीण परिवारों का जीवन स्तर काफी नीचा बना हुआ है।

4. सामाजिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा अभावा की स्थिति देखने को मिलती है। शिक्षा व स्वास्थ्य, पेयजल, स्वच्छता आदि के क्षेत्रों में अनेक प्रकार की कमियां पायी जाती है।

20 शब्दों वाले प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न– फर्म वानिकी व सामाजिक वानिकी में क्या अन्तर होता है?

उत्तर– फार्म वानिकी की स्कीम के अन्तर्गत विभागीय नर्सरी में तैयार किये गये पौधे कृषको, स्कूलों, पंचायतों, आदि को अपनी भूमि पर लगाने के लिए दिए जाते है जबकि सामाजिक वानिकी में घटिया वन क्षेत्रों सडकों, नहरों व रेल की पटरियों के किनारे वृक्ष लगाये जाते है ताकि पर्यावरण में सुधार हो सके।

प्रश्न– भारत में सिंचाई का महत्व क्या है ?

उत्तर– सिंचाई का महत्व वर्षा की कमी व अनिश्चितता के कारण विशेष फसलों की पानी की आवश्यकता की पूर्ति, गहन खेती व कृषि की उत्पादकता बढाने एवं नई भूमि पर खेती करने, आदि के लिए होता है।

J.D.P.G. COLLEGE

प्रश्न– भारत में कृषि के लिए संस्थागत साख प्रदान करने वाली तीन प्रमुख संस्थाएँ बताइये।

उत्तर– कृषि के लिए संस्थागत साख की व्यवस्था सरकार, सहकारी संस्थाओ व व्यापारिक बैंको के द्वारा की जाती है। महाजनों व साहूकारों के प्रभाव को कम करने के लिए इनके विकास पर जोर दिया गया है, लेकिन आज भी निजी क्षेत्र का प्रभाव कायम है।

प्रश्न– भारत की नवीन औद्योगिक नीति की शुरूआत कब हुई?

उत्तर– 6 अप्रैल 1948 को भारतीय संसद में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने औद्योगिक नीति सम्बन्धी प्रस्ताव रखा था जिसका आधार 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' को स्वीकार किया गया था। इसमें उद्योगों को चार श्रेणियों में बाटा गया था।

प्रश्न– भारत में विदेशी व्यापार नीति पर आधारित है?

उत्तर– भारत में विदेशी व्यापार नीति प्रमुखतया निर्यात– संवर्द्धन पर आधारित है। इसमें प्रायः5 वर्ष के लिए निर्यात बढाने के उपाय सुझाये जाते है। नवीनतम विदेशी व्यापार नीति 2015–2020 के लिए तत्कालीन वाणिज्य व उद्योग राज्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीताराम द्वारा 1 अप्रैल 2015 को जारी की गई थी।

प्रश्न– 12वीं पंचवर्षीय योजना के चार प्रमुख उद्देश्य बताइये।

उत्तर– 12वीं योजना में तीव्र विकास दर, समावेशी विकास व सुस्थिर विकास पर बल दिया था। इसमें विकास के लाभ समाज के सभी वर्गो तक पहुंचाने और सभी प्रदेशों को विकास का लाभ पहुचाने की नीति अपनायी गयी थी।

प्रश्न– भारत में प्रादेशिक असमानता के कोई तीन कारण बताइये।

उत्तर– प्रादेशिक असमानता के तीन कारण निम्नांकित रहे है :– 1. प्राकृतिक साधनों की असमानता पाया जाना जैसे भूमि, खनिज समपदा, जल आदि, 2. आधरभूत ढांचे की असमानता जैसे सडक, रेल–मार्ग, विद्युत आदि एवं 3. शासन –प्रशासन में अन्तर का पाया जाना।

प्रश्न– भारत में वर्तमानद मुद्रास्फीति के कोई तीन कारण बताइये।

उत्तर– मुद्रास्फीति के प्रथम कारण खाद्यान्नों की पूर्ति का मांग की तुलना में अभाव,दूसरा कारण जमाखोरी व काला बाजारी तथा वितरण की दोषपूर्ण व्यवस्था एवं तीसरा कारण विस्तृत मुद्रा (M_3) का प्रतिवर्ष वृद्धि दर से काफी अधिक बढ़ना माया गया है। इससे अधिक मुद्रा कम माल की मात्रा का पीछा करती है, जो मुद्रास्फीति को जन्म देती है।

100 शब्दों से अधिक उत्तर नही होना चाहिए

प्रश्न– भारत के आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों का महत्व

उत्तर– प्राकृतिक साधनों में भूमि, खनिज पदार्थो, वन, जल व शक्ति के साधनों का बड़ा योगदान होता है। खनिज पदार्थों की उपलब्धि व विविधता, जल की पर्याप्तता व शक्ति के परम्परागत व नवीकरणीय साधनों की मात्रा अर्थिक विकास को प्रभावित करती है। भारत के पास कुछ प्राकृतिक साधनों की कमी है, लेकिन कुल मिलाकर यह प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से एक धनी देश माना गया है और भारत को 'सम्पन्नता के बीच निर्धनता' की पहेली वाला देश माना जाता है। वर्तमान में भारत 7 प्रतिशत से अधिक वार्षिक वृद्धि दर प्राप्त कर सका है, लेकिन इसकी 8–9 प्रतिशत वृद्धि दर की क्षमता है, क्योंकि उसके पास उसके लायक प्राकृतिक साधन मौजूद है, जिनका उचित आर्थिक नीतियां अपनाकर विदोहन ठीक ढंग से किया जाना चाहिए।

J.D.P.G. COLLEGE

प्रश्न– भारतीय उद्योगों के लिए औद्योगिक वित्त

उत्तर– वर्तमान समय में बडे पैमाने के उद्योगों एवं भारी उद्योगों – 8 आधारभूत क्षेत्र के उद्योगें, जैसे कोयला, खनिज–तेल प्राकृतिक गैस, सीमेन्ट व विद्युत के विकास के लिए भारी मात्रा में स्थिर पूंजी व कार्यशील पूंजी की आवश्यता होती है इनके लिए वित्तीय साधनों के लिए निम्न स्त्रोत होते है –

पूंजी बाजार में शेयर व ऋण पत्र जारी करके पूंजी जूटाना विभिन्न वित्तीय संस्थाओं से कर्ज की व्यवस्था। औद्योगीकरण की प्रगति के साथ–साथ पूंजी मांग बढ रही है जिसकी पूर्ति करने के लिए विदेशी प्रत्यक्ष निवेश संस्थागत निवेश का भी उपयोग बढ रहा है। भारत में रयायन, बेसिक धातु–उत्पादों व परिवहन के साज–सामान का उत्पादन बढाना आवश्यक माना गया है।

प्रश्न– भारत में गरीबी के कारण बताइये।

उत्तर– भारत में गरीबी का प्रमुख कारण अल्पविकास (अण्डर डेवलपमेंट) माना गया है।प्रतिवर्ष एक करोड नये व्यक्ति श्रम शक्ति में प्रवेश करते है जिनके लिए रोजगार उपलब्ध करना सुगम नही है। भारत में कृषि का क्षेत्र अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है, उसमें कृषि का उपविभाजन व अपखण्डन प्रमुख है। सिंचाई का विकास अपर्याप्त मात्रा में हुआ है। प्रायः फसलों को प्राकृतिक कारणों से भारी क्षति पहुंचती है और कृषकों को पर्याप्त मुआवजा नहीं मिल पाता। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक पिछडापन व ग्रामीण विकास का अभाव रहने से गरीबी बनी रहती है। यत्र–तत्र–सर्वत्र आर्थिक अभाव से गरीबी दूर नही हो पाती है और योजनाओं के फलस्वरूप ट्रिकल डाउन प्रभाव उत्पन्न नही होने से निर्धनता निरंतर बनी रहती है। गरीबी का प्रमुख कारण ढांचागत माना गया है – श्रम शक्ति के बढ़ने पर श्रम की पूर्ति श्रम–शक्ति की मांग से अधिक रहने से, आर्थिक असंतुलन अर्थव्यवस्था में जड जमाए रहता है और देश गरीबी के जाल से मुक्त नही हो पाता है।

प्रश्न– भारत में मूल्य वृद्धि को नियंत्रित करने के कोई चार सुझाव दीजिये।

उत्तर– मूल्य वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए सर्वप्रथम खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए खाद्यान्नों –गेहू, चावल आदि एवं साथ में प्रोटीन आधारित खाद्य–पदाथों जैसे दूध, अंडे, मछली, खाद्य तेल आदि का उत्पादन बढाया जाना चाहिए। दूसरा उपाय, आम जनता के लिए उचित कीमत पर, खाद्य सुरक्षा के लिए, खाद्यानों के वितरण की व्यवस्था की जानी चाहिए। इस सम्बन्ध में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के दोषों व कमियों को दूर किया जाना चाहिए और आवश्यकतानुसार प्रत्यक्ष लाभ हस्तान्तरण का उपयोग किया जाना चाहिए। मूल्य वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए जमाखोरी व काला बाजारी पर तीव्र प्रहार किया जाना चाहिए और परोक्ष करो में राहत दी जानी चाहिए। अनुत्पादक व्यय को नियंत्रित किया जाना चाहिए और निवेश को बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाया जाना चाहिए।

प्रश्न– सरकार की 15 जून 2016 को घोषित नई विमानन नीति का परिचय दीजिए।

उत्तर– केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने 15 जून, 2016 को नई विमानन–नीति को अपनी मंजूरी दे दी थी। इसे पासा पलटने वाली नीति कहा गया है। इससे सुधारों को पंख लग जायेगे। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखत है –

1. इनके लागू होने पर 5/20 का युग समाप्त हो जायेगा। इसका अर्थ यह है कि घरेलू उडान भरने वाली कम्पनियों को विदेशों में उडान भरने से पूर्व पांच वर्ष तक अपने कार्य का संचालन करना जारूरी नही होगा। लेकिन उन्हें 20 हवाई जहाज लगाने होगे अथवा भारत में अपनी

कुल क्षमता का 20% इसमें लगाना होगा। (जो भी ऊँचा हो)

2. जो भी विदेशी एयरलाइन आना चाहे, उसका स्वागत होगा।
3. इससे प्रादेशिक हवाई उडानों का जुडाव बढेगा।
4. हवाई किराया कम होगा, प्रति घंटा उड़ानों पर 2500 रू. का किराया होगा और प्रादेशिक जुडाव कोष के लिए यात्रियों पर एक मामूली लेवी लगायी जायेगी।

लेकिन उपर्युक्त शर्तो का पालन करने के लिए भारतीय उद्यमकर्ता को काफी व्यय करना होगा। नई विमानन नीति नई दिशा में एक प्रयास है, इसे सफल बनाया जाना चाहिए। घरेलू कम्पनी पहले दिन से विदेश में उडान भर सकती है।

प्रश्न– भारतीय स्टेट बैक के साथ 5 सहयोगी बैंको के शामिल होने से क्या लाभ होगा?

उत्तर– भारतीय स्टेट बैंक में निम्न 5 सहयोगी बैंको का विलय एक अप्रैल 2017 से किया गया है – स्टेट बैक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर, स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद, स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर और स्टेट बैंक ऑफ पटियाला। इससे बैंक की लागत घटेगी, लाभ में सुधार होगा, दोहर खर्च पर लगाम लगेगी और SBI एक बैंकिंग पॉवर हाउस बनकर उभरेगा।

बैंकिंग सुधार की प्रक्रिया में बैंकों के विलयन को आवश्यक माना गया है। भविष्य में इस प्रक्रिया को जारी रखा जायेगा।

प्रश्न– विकासशील अर्थव्यवस्था के रूप में भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– विकासशील अर्थव्यस्था के रूप में भारत की प्रमुख विशेषताए निम्न प्रकार है –

(i) भारत में नियोजित मिश्रित अर्थव्यवस्था –
(ii) राष्ट्रीय आय में वृद्धि –
(iii) बचत व निवेश में वृद्धि –
(iv) कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि –
(v) कृषि का आधुनिकीकरण
(vi) औद्योगिक विकास
(vii) सामाजिक व आर्थिक इन्फ्रास्ट्रक्चर का विस्तार –
(viii) निर्धरता दुर करने के विशिष्ट कार्यक्रम –
(ix) भारतीय श्रमिकों का कृषि से औद्योगिक क्षेत्र की ओर पलायन–

प्रश्न– 12वीं पंचवर्षीय योजना के मुख्य उद्देश्य बताइये?

उत्तर– 12वीं पंचवर्षीय योजना की अवधि 1 अप्रैल 2012 से 31 मार्च 2017 है जिसका मुख्य उद्देश्य निम्न है –

(i) आर्थिक विकास दर का लक्ष्य 8 प्रतिशत, कृषि का 4 प्रतिशत उद्योग क्षेत्र का 7.6 प्रतिशत तथा सेवा क्षेत्र में 9 प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य रखा गया है।
(ii) निर्धनता में 10 प्रतिशत कमी लाना।
(iii) 5 करोड रोजगार के नए अवसर सृजित करना।
(iv) शिशु मृत्यु दर 25, मातृत्व मृत्यु दर 1 तथा कुल प्रजनन दर को योजना के अन्त तक 2.1 करना।
(v) सभी गांवों तक बिजली पहुंचाना।
(vi) आधारित संरचना क्षेत्र निवेश G.D.P का 9 प्रतिशत करना
(vii) योजना के अन्त तक 90 प्रतिशत परिवारों तक बैंकिंग सुविधा।
(viii) शिक्षाप्राप्त करने की माध्य आयु 7 वर्ष करना।

J.D.P.G. COLLEGE

प्रश्न– भारत के आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों का महत्व बताइये?

उत्तर– भारत में आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को निम्न बिन्दुओं आधार पर स्पष्ट किया जाता है –

(i) भारत में विभिन्न प्रकार के खनिजों के विपुर भण्डार है। अतः यह खनिज आधारित उद्योगों के विकास की आपार सम्भावनाएं है।

(ii) देश में विशाल उपजाऊ मैदान है जिनमें उपजाऊ मिट्टी है जो कृषि एवं उद्योगों के लिए उपर्युक्त है।

(iii) भारत में लगभग 24 प्रतिशत भू–भाग पर वन विस्तृत है जिससे हमे कई प्रकार के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होते है।

(iv) देश में विभिन्न प्रकार की मिट्टीयां पाई जाती है जो विभिन्न की फसलों के लिए उपर्युक्त है।

(v) देश में विभिन्न प्रकार के परम्परागत व गैर–परम्परागत ऊर्जा संसाधनों के विकास की व्यापक सम्भावनाएं है।

(vi) देश में कई प्रकार की जलवायु एवं भौतिक भू–भाग है जिससे विभिन्न प्रकार के उद्योगों की अच्छी सम्भावनाएं है। जो देश के आर्थिक विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रश्न– सार्वजनिक वितरण प्रणाली की व्याख्या कीजिए?

उत्तर– सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा लोगों को आवश्यक वस्तुएं उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाई जाती है। देश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली सर्वप्रथम 1950 में प्रारम्भ की गई तथा जून 1992 में नवीनकृत सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा जून 1997 में लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली प्रारम्भ की गई। इसके अन्तर्गत तीन स्तरीय प्रणाली विकसीत की गई है जिसमे उपभोक्ताओं को तीन वर्गों में बांटा गया है :–

(i) अन्त्योदय अन्न योजना वाले परिवार
(ii) गरीबी रेखा से नीचे वाले परिवार (BPL)
(iii) गरीबी रेखा से थोडे ऊपर वाले परिवार (APL)

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में खाद्यान्नों को उपलब्ध करवाने का मूल्य कार्य मुख्यतः भारतीय खाद्य निगम (FCI)द्वारा किया जाता है। इस प्रणाली द्वारा लोगों को पर्याप्त पोषण उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है।

प्रश्न– भारत में कृषि साख के विभिन्न संस्थागत स्त्रोत की व्याख्या कीजिए?

उत्तर– वर्तमान में भारत में अनेक संस्थाएँ कृषि साख उपलब्ध करवा रही है जिसमें सबसे प्रमुख है सहकारी साख संस्थाएं, ये 2 प्रकार कि है पहली –अल्पकालीन सहकारी साख संथाए जिसमें प्राथमिक कृषि साख समितियां, केन्द्रीय सहकारी बैंक तथा राज्य सहकारी बैंक शामिल है।

दूसरी दीर्घकालीन सहाकरी साख संस्था जिसमें भूमि विकास बैंक शामिल है।

कृषि साख हेतु सर्वोच्च संस्था के रूप मे 12 जुलाई 1982 को राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) की स्थापना की गई।

इसके अतिरिक्त भी कई संस्थाओं द्वारा कृषि साख उपलब्ध करवाई जाती है जिसमें से मुख्य संस्थाएं निम्न प्रकार है – व्यापारिक बैंक, सरकार द्वारा, कृषि पुनर्वित व विकास निगम, कृषि वित्त निगम, क्षेत्रिय ग्रामीण, बैंक व स्टेटब बैंक ऑफ इण्डिया व इसके सहायक बैंक वर्तमान में कृषि में संस्थागत साख स्त्रोतों का हिस्सा निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

J.D.P.G. COLLEGE

सभी प्रश्न 20 अंको के है।

प्रश्न– भारतीय अर्थव्यवस्था की मूलभूत विशेषताये कौनसी है पिछले दशक में हुये परिवर्तनों को समझाइये।

उत्तर– भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताये :– स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में 1951 से नियोजित विकास का मार्ग अपनाया गया है जिस पर वह लगातार चलाता जा रहा है। अब तक योजनावधि के लगभग 60 वर्ष बीत चुके है। इस समय काल में विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक प्रगति हुई है। निम्नलिखित बातों से हम इसे दर्शा सकते है :–

(i) भारत में नियोजित मिश्रित अर्थव्यवस्था –
(ii) राष्ट्रीय आय में वृद्धि –
(iii) बचत व विनियोगों में वृद्धि–
(iv) कृषिगत उत्पादन में वृद्धि–
(v) कृषि का आधुनिकीरण –
(vi) औद्योगिक विकास –
(vii) सामाजिक व आर्थिक इन्फ्रास्ट्रक्चर का विस्तार –
(viii) निर्धनता दूर करने के विशिष्ट कार्यक्रम –
(ix) आर्थिक उदारीकरण की ओर अग्रसर–

प्रश्न– भारतीय कृषि की विशेषताएं या महत्व बताते हुये उसके सामने आने वाली समस्याये स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कृषि का भारतीय अर्थव्यवस्था में गौरवपूर्ण स्थान है। कृषि देश के उद्योग, व्यापार, यातायात के साधनों का विकास, पशु–पालन का आधार है। अतः इन सबसे विकास के लिए कृषि महत्व और भी बढ जाता है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड है, अतः भारत के विकास के लिए कृषि का महत्व और भी अधिक है। अतः यह कथन अक्षरशः सत्य है कि ''भारत में आर्थिक विकास की कुंजी कृषि के पास है।''

1. कृषि का राष्ट्रीय आय में योगदान –
2. कृषि का रोजगार की दृष्टि से महत्व –
3. भारतीय कृषि का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में स्थान –
4. कृषि व उद्योगों के बीच सम्बन्ध –
   i) उत्पादन–कडियाँ –
   ii) मांग की कड़ियाँ–
   iii) बचत व विनियोग की कडियाँ –
5. कृषि का निर्धनता – उन्मूलन में योगदान –
6. सामान्य जीवन–स्तर में सुधार व मुद्रास्फीति पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए कृषिगत विकास आवश्यक –
7. भारत को तीव्र व समावेशी विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कृषिगत व ग्रामीण विकास पर विशेष ध्यान देना होगा। उसके बिना समाज के सभी वर्गों व सभी समुदायों को आर्थिक विकास का लाभ समान रूप से नही पहुंचाया जा सकता।

भारतीय कृषि की समस्याएँ :–

1. भूमि की निम्न उत्पदकता –
2. भूमि का उप–विभाजन –
3. मानसून पर निर्भरता तथा सिंचाई सम्बन्धी समस्याएं –
4. ग्रामीण ऋणग्रस्तता –
5. भूमि पर भार में वृद्धि –
6. प्राचीन तरीके व औजार –
7. उत्तम बीजों का अभाव –
8. खाद का अभाव –
9. फसल के रोगों से क्षति –
10. वित्तीय सुविधाओं का अभाव –

प्रश्न– निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(A) भारत की नई औद्योगिक नीति–

उत्तर– सरकार ने जुलाई 1991 में नई औद्योगिक नीति जारी कि जिसमें (LPG) उदारीकरण निजीकरण व वैश्वीकरण की नीति को अपनाते हुए निम्न मुख्य कदम भी उठाये –

(i) लाइसेन्सो से छुटकारा–
(ii) प्रत्यक्ष विदेशी विनियोग सीमा में वृद्धि की गई

(iii) रूग्ण इकाइयों को औद्योगिक एवं पुननिर्माण निगम को सोपना
(iv) निजीकरण को बढावा देना
(v) केवल 8 उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में रखा गया
(vi) उच्च प्राथमिकता वाले उद्योगों को विशेष सुविधाएँ
(vii) लघु उद्योगों को लाइसेन्स से छुट

(B) औद्योगिक वित्त में वित्तीय संस्थाओं की भूमिका पर संक्षिप्त टिप्पणी –

उत्तर– भारत में सरकार ने उद्योगों को बढावा देने के लिए समय–समय पर प्रोत्साहन दिया गया तथा नई–नई नीतियाँ व वित्त की सुविधाएँ दी गई ताकी उद्योगों के जरिये रोजगार को व आर्थिक वृद्धि में सहायता मिले। भारत में औद्योगिक वित्त के प्रमुख स्त्रोत निम्न है –

(i) जनता के द्वारा विनियोग करना
(ii) देशी बैंकर व साहुकार
(iii) औद्योगिक सहकारी समितियाँ
(iv) भारतीय औद्योगिक वित्त निगम (IFCI)
(v) भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम (ICICI)
(vi) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI)
(vii) भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI)

प्रश्न– भारत में कुटीर व लघु उद्योगों का महत्व, समस्याओं तथा इससे सम्बन्धित सरकारी नीति का वर्णन कीजिए?

उत्तर– कुटीर, लघु एवं मध्यम उद्योग का अर्थ– उद्योग साधारणतया दो प्रकार के होते है –

1. बडे पैमाने के उद्योग
2. छोटे पैमाने के उद्योग

जिन उद्योगों मं भूमि, श्रम, पूंजी, प्रबन्ध आदि बडे पैमाने पर प्रयोग किये जाते है बडे पैमाने के उद्योग कहलाते है एवं जिन उद्योगों में भूमि, श्रम, पूंजी प्रबन्ध आदि का आकार अपेक्षाकृत छोटा होता है वे छोटे पैमाने के उद्योग कहलाते है। छोटे पैमाने के उद्योगों का वर्गीकरण कर तीन प्रकार से किया जाता है –

(i) कुटीर उद्योग
(ii) लघु उद्योग
(iii) मध्यम उद्योग

भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर, लघु एवं मध्यम उद्योगो का महत्व–

भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर, लघु एवं मध्यम उद्योगों के महत्व को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है –

(i) रोजगार –
(ii) कम पूँजी और अधिक उत्पादन–
(iii) उत्पादन कार्य में कुशलता –
(iv) आय व सम्पत्ति का न्यायोचित वितरण –
(v) विकेन्द्रीकरण अर्थव्यवस्था –
(vi) रोजगार की स्थिरता व सुरक्षा –
(vii) औद्योगिक शान्ति –
(viii) सैनिक महत्व–
(ix) शीघ्र उत्पादन वृद्धि –
(x) देश की आत्म –निर्भरता –
(xi) राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि –
(xii) विदेशी मुद्रा अर्जन –

"कुटीर, लघु एवं मध्यम उद्योगों की समस्याएँ"

भारत में लघु एवं मध्यम उद्योगों की प्रमुख समस्याएँ निम्न प्रकार से है :–

(i) कच्चे माल की समस्या –
(ii) आधुनिक तकनीक व औजारों का अभाव–
(iii) बीमार इकाइयां–
(iv) अशिक्षित एवं अकुशल कारीगर–
(v) उत्पादन का सीमित क्षेत्र–
(vi) वित्त सम्बन्धी समस्या –
(vii) ऊँची लागत –

J.D.P.G. COLLEGE

(viii) विपणन की समस्या –
(ix) बडे उद्योगों की प्रति स्पर्धा –
(x) उपभोक्ताओं की अरूचि व संरक्षण का अभाव–
(xi) कर भार–

"लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास के लिए सरकार द्वारा किये गए उपाय"

भारतवर्ष में लघु एवं मध्यम उद्योगों की समस्याओं के समाधान हेतु सरकार ने अनेक उपाय किये है। सरकार द्वारा लघु एव मध्यम उद्योगों के विकास के लिए किये गये उपायों को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया है –

(i) संगठनात्मक उपाय –
(ii) संस्थागत वित्त सहायता –
(iii) विक्रय सम्बन्धी सुविधाएँ –
(iv) तकनीकी कौशल एवं दक्षता विकास –
(v) अन्य उपाय–
(vi) नीतिगत उपाय–

प्रश्न– संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

उत्तर–

(A) ग्रामीण विकास के कार्यक्रम व नीति– भारत एक गावों का देश है क्योंकि भारत की 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गांवों में निवास करती है। अतः हमें भारत का विकास करने के लिए गांवों का विकास करना होगा। भारत में गांवों के विकास के लिए कई योजनाएं व नीतियां बनाई गई है जो निम्न है –
(i) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम–
(ii) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY) अथवा अजिविका (राष्ट्रीय ग्रामीण जीविका मिशन–NRLM)–
(iii) जवाहर ग्राम समृद्धि योजना –
(iv) राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन–
(v) प्रधानमन्त्री आदर्श ग्राम योजना (PMAGY)–

(B) **मुद्रा स्फीति** – मुद्रा स्फीति की स्थिति में मुद्रा का मूल्य कम तथा मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होती है। फलस्वरूप सामान्य कीमत स्तर में भी वृद्धि होती है। सामान्यतः मंहगाई की स्थिति को हम मुद्रा स्फीति कह सकते है।

मुद्रा स्फीति को रोकने के लिए जो उपाय काम में लिए जाते है उन्हे संस्फीति कहते है।

मुद्रा स्फीति दो तरीके से मापी जाती है –

1. उपभोक्ता मूल्य सूचंकाक (C.P.I.)
2. थोक मूल्य सूचंकाक (W.P.I.)

मुद्रा स्फीति दो प्रकार की होती है –

(i) लागत जन्य स्फीति –
(ii) मांग जन्य मुद्रा स्फीति –

प्रश्न– भारत में गरीबी के कारणों की विवेचना कीजिए। गरीबी निवारण के उपाय बताइये।

उत्तर– भारत में गरीबी अथवा निर्धनता के प्रमुख कारण –

1. वित्तीय साधनों कमी –
2. प्रकृतिक साधनों का समुचित उपयोग नही–
3. तकनीकी ज्ञान का अभाव –
4. जनसंख्या में तेजी से वृद्धि –
5. बेरोजगारी एवं अर्द्ध –बेरोजगारी की समस्या –
6. पूंजी निर्माण की धीमी गति–
7. प्राकृतिक विपदाएँ–
8. आर्थिक असमानता –

गरीबी अथवा निर्धनता को दूर करने के उपाय–

1. आर्थिक विकास की दर को बढ़ाना–
2. बचत, विनियोग एवं पूंजी निर्माण में वृद्धि–

3. जनसंख्या वृद्धि पर रोक–
4. बेरोजगारी की समस्या का निवारण–
5. प्रगतिशील कर नीति–
6. जन–कल्याण कार्यों में वृद्धि–

प्रश्न– भारत में बेरोजगारी की समस्या की विवेचना कीजिए, इस समस्या के हल हेतु उपाय बताइये?

उत्तर– बेरोजगारी के कारण –

1. जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि–
2. शिक्षा का प्रसार–
3. दोषयुक्त शिक्षा पद्धति–
4. कृषि का पिछड़ापन–
5. आर्थिक मंदी–
6. शिक्षित वर्ग श्रम के महत्व के प्रति सजग नही–
7. शरणार्थियों का आगमन–

प्रश्न– सामाजिक सुरक्षा से आप क्या समझते है? भारत में श्रमिकों को उपलब्ध सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था का वर्णन करो।

उत्तर– सामाजिक सुरक्षा एक गतिशील विचार है, जिसका सम्बन्ध औद्योगिक श्रमिको से है। श्रमिक समाज में रहता है, अतः समाज द्वारा उसको संरक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। सामाजिक सुरक्षा से आशय उस सुरक्षा से है जो समाज द्वारा अपने सदस्यों को संकटकालीन परिस्थितियों में दी जाती है।

''सामाजिक सुरक्षा से आशय समाज द्वारा प्रदान की जाने वाली उन सुरक्षाओं से है, जो व्यक्ति को उसके जन्म से लेकर मृत्यु तक, पालना से समाधि तक घटित होने वाली आकस्मिकताओं से बचाती है।''

भारत में श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के तरीके :–

1. श्रमिक क्षतिपूर्ति अधिनियम 1923–
2. कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948–
3. मातृव्य हित (प्रसूति) लाभ अधिनियम, 1961–
4. कर्मचारी भविष्य निधि एवं विविध व्यवस्थाएँ अधिनियम, 1952–
5. कर्मचारी खान भविष्य निधि एवं विविध व्यवस्थाएँ अधिनियम, 1984–
6. कर्मचारी परिवार पेंशन योजना, 1971 –
7. ग्रेच्युती भुगतान अधिनियम, 1972 –
8. जबरन छुट्टी एवं छंटनी लाभ –
9. कर्मचारी जमा राशि सम्बद्ध बीमा योजना,1976–
10. मृत्यु सहायता कोष –
11. वृद्धावस्था पेंशन योजना –

सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र की कमियाँ–

1. सीमित क्षेत्र वाली व्यवस्था श्रमिकों की सुरक्षा तक ही सीमित है।
2. शीघ्र लाभ नही मिल पाता है।
3. बुढापा पेंशन स्कीम की सीमाएँ।
4. ऐच्छित बीमा सम्बन्धी कमियाँ
5. उत्पादकता एवं मजदूरी।

प्रश्न– भारतीय विदेशी व्यापार की वर्तमान प्रवृतियों का वर्णन कीजिए?

उत्तर– भारत के विदेशी व्यापार की प्रमुख विशेषताएँ निम्न है :–

1. अधिकांश विदेशी व्यापार समुद्री मार्गों द्वारा
2. प्रतिकुल व्यापार सन्तुलन
3. विश्व के विदेशी व्यापार में भारत का स्थिर अनुपात
4. परम्परागत निर्यात पदार्थों के अनुपात में कमी
5. निर्यात प्रोत्साहन एवं आयात नियंत्रण
6. अधिकांश व्यापार कुछ ही बन्दरगाहों द्वारा
7. देश के निर्यात में निरन्तर वृद्धि
8. देश के आयातों में निरन्तर वृद्धि
9. राष्ट्रीय आय की तुलना में निर्यात का गिरना
10. विदेशी व्यापार की रचना में परिवर्तन
11. विदेशी व्यापार नीतियों में क्रांतिकारी रूख
12. नवीन निर्यात–आयात नीति
13. निर्यात संवर्द्धन सम्बन्धी प्रयत्नों में वृद्धि

J.D.P.G. COLLEGE